

डॉ. जॉन ओसवाल्ट, निर्गमन, सत्र 1, निर्गमन 1-2

© 2024 जॉन ओसवाल्ट और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. जॉन ओसवाल्ट द्वारा निर्गमन की पुस्तक पर दिए गए अपने उपदेश हैं। यह सत्र 1, निर्गमन 1-2 है।

निर्गमन एक यूनानी शब्द है जिसका अर्थ है बाहर निकलने का रास्ता।

एक्स का मतलब है बाहर निकलना और ओडोस का मतलब है रास्ता, बाहर निकलने का रास्ता। अब, अगर मैं पूछूं कि किससे बाहर निकलने का रास्ता, तो आपका जवाब क्या होगा? मिस्र से बाहर निकलने का रास्ता, हाँ। लेकिन इसमें एक समस्या है।

समस्या यह है कि वे अध्याय 15 तक मिस्र से बाहर आ चुके हैं। वे बंधन से बाहर आ चुके हैं। उन्होंने अपने उद्धार का अनुभव किया है, और वे बाहर निकलकर वादा किए गए देश की ओर जा रहे हैं।

तो, हम खुद से पूछते हैं कि इससे बाहर निकलने का रास्ता क्या है। किस रास्ते से बाहर निकलना है? और अध्याय 16 से 24 में आगे क्या आता है? खैर, यह अध्याय 16 से 18 में एक रहस्योद्घाटन है। यह ईश्वर की कृपा, ईश्वर की उनके प्रति देखभाल का रहस्योद्घाटन है।

उन्होंने मिस्र से मुक्ति में एक शक्तिशाली परमेश्वर को देखा है, लेकिन ऐसा लगता है कि वे वास्तव में उसे बहुत अच्छी तरह से नहीं जानते हैं। और इसलिए, अध्याय 16 से 18 में, हमें परमेश्वर की भविष्यवाणी का रहस्योद्घाटन मिलता है। और फिर आगे क्या होता है? अध्याय 19 से 24 में, वाचा का दिया जाना।

और वाचा में, परमेश्वर अपने चरित्र को प्रकट कर रहा है। वह सृष्टि के उस क्रम को प्रकट कर रहा है जिस पर सारा जीवन निर्भर करता है। वे इस वाचा के रिश्ते में सीख रहे हैं कि परमेश्वर कौन है।

भगवान उनसे कहते रहते हैं, तुम्हें पवित्र होना चाहिए क्योंकि मैं पवित्र हूँ। अब, फिर से, हम पवित्रता के बारे में एक बहुत ही विकृत विचार रखते हैं। जैसा कि मैंने आपको पहले बताया है, हममें से ज्यादातर लोग सोचते हैं कि पवित्रता एक छोटी बूढ़ी महिला है जिसके पास एक सपाट काली टोपी, लंबी आस्तीन, लंबी हेम, एक मीठी मुस्कान और एक दुष्ट छाता है।

और इसलिए, जब हम सुनते हैं कि तुम्हें पवित्र होना चाहिए क्योंकि मैं पवित्र हूँ, तो हम यही सोचते हैं। लेकिन परमेश्वर इस बारे में बिल्कुल भी बात नहीं कर रहा है। वह कह रहा है कि जिस तरह से तुम अपने दासों के साथ व्यवहार करते हो वह तुम्हारी पवित्रता का प्रतीक है।

वह कह रहा है कि जिस तरह से आप अपने जानवरों के साथ व्यवहार करते हैं वह आपकी पवित्रता का प्रतीक है। जिस तरह से आप अपने पड़ोसियों के साथ व्यवहार करते हैं वह आपकी

पवित्रता का प्रतीक है। और हम खुद से पूछते हैं, ये चीजें पवित्रता का प्रतीक क्यों होंगी? क्योंकि यह भगवान के चरित्र का प्रतीक है।

और इसलिए, इन अध्यायों में, हम यह खोज रहे हैं कि उन्हें न केवल शारीरिक बंधन से मुक्ति की आवश्यकता है, बल्कि उन्हें आध्यात्मिक अंधकार से भी मुक्ति की आवश्यकता है। वे नहीं जानते कि ईश्वर कौन है। और इसलिए, हम ईश्वरीय व्यवस्था के ईश्वर को देखते हैं, हम सिद्धांतों के ईश्वर को देखते हैं, लेकिन पुस्तक अभी भी कहीं नहीं है।

इससे ज़्यादा और क्या हो सकता है? वे मिस्र से बाहर आ गए हैं, और उन्हें इस बात की नई समझ है कि परमेश्वर कौन है और वह कैसा है। इससे ज़्यादा और क्या हो सकता है? खैर, 16 अध्याय और हैं। और वे 16 अध्याय क्या हैं? ये 16 अध्याय पूरी बाइबल के सबसे उबाऊ अध्यायों में से 16 हैं।

आपके पास पाँच अध्याय हैं जहाँ भगवान कहते हैं, इसे इस तरह से करो और इस तरह से करो और इस तरह से करो और इस तरह से करो और इस तरह से करो। और फिर, थोड़े अंतराल के बाद, आपके पास पाँच और अध्याय हैं जो कहते हैं, उन्होंने इसे इस तरह से किया और उस तरह से किया और उस तरह से किया। यहाँ क्या हो रहा है? जो हो रहा है वह यह है कि भगवान घर आना चाहते हैं।

हमें तम्बू के बारे में दो लगभग समान वर्णन क्यों मिलते हैं? क्योंकि यह परमेश्वर के लिए इतना महत्वपूर्ण है। यह इतना महत्वपूर्ण है कि अब उसे घर आने, पहाड़ से नीचे उतरने और शिविर के बीच में रहने का मौका मिला है। बंधन से बाहर निकलने का रास्ता? हाँ।

लेकिन मानवीय बंधन और पीड़ा जितनी भी वास्तविक हो, यह हमारी सबसे गहरी मानवीय समस्या नहीं है। आध्यात्मिक अंधकार से बाहर निकलने का रास्ता? हाँ। हमें परमेश्वर को जानने की कितनी सख्त ज़रूरत है और वह कौन है और कैसा है।

लेकिन हमारी असली मानवीय समस्या क्या है? हमारी असली मानवीय समस्या यह है कि हम अपने जीवन के स्रोत से अलग हो गए हैं। जैसे कि एक पौधा जमीन से उखाड़ दिया गया हो। यह उस तरह से लंबे समय तक जीवित नहीं रह सकता जैसा कि इसे होना चाहिए था।

और इसलिए, अंतिम समस्या अलगाव की समस्या है। इससे बाहर निकलने का रास्ता। तो, यह किताब, कई मायनों में, एक प्रतिमान है।

मैंने कुछ समय पहले एक कार्टून देखा था। लड़के ने पूछा, पापा, प्रतिमान क्या होता है? और पापा ने कहा, अच्छा बेटा, प्रतिमान तो प्रतिमान ही होता है। और बेटे ने कहा, तुम भी नहीं जानते, है न? प्रतिमान क्या होता है? प्रतिमान तो एक मॉडल होता है।

एक मानक मॉडल। और निर्गमन मोक्ष के लिए मानक मॉडल है। यदि आप मोक्ष पर बाइबिल की शिक्षा को समझना चाहते हैं, तो निर्गमन से शुरुआत करें।

जिस तरह उत्पत्ति हमें मानवीय समस्या की प्रकृति समझाती है और हमें इस समस्या के समाधान की मूल रूपरेखा देती है, उसी तरह निर्गमन हमें मानवीय ज़रूरत के बारे में बताता है और यह भी बताता है कि परमेश्वर उस ज़रूरत को कैसे हल करना चाहता है। इसलिए, निर्गमन ही समाधान है। और जो रूपरेखा आपने वहाँ दी है, वह इसे थोड़ा और विस्तार से बताती है।

और आप देख सकते हैं कि रूपरेखा पर रहस्योद्घाटन शब्द की प्रमुखता है। पुस्तक में दस बार, अध्याय 7 और अध्याय 14 के बीच, आपको यह वाक्यांश मिलेगा, तब आप या वे जान लेंगे कि मैं यहोवा हूँ। दस बार, आपको यह विचार आता है कि शायद भगवान के मन में कुछ है।

सभी उद्धार का मूल यह है कि उसे वैसे ही जाना जाए जैसा वह वास्तव में है। अब फिर से, हमने इस बारे में पहले भी बात की है, लेकिन मैं आपको याद दिला दूँ, जब भी आप अपनी बाइबल में छोटे अक्षरों में भगवान को देखते हैं, इस तरह नहीं, बल्कि इस तरह, वह ईश्वरीय नाम है। हम इसे वैसे ही पढ़ते हैं जैसे यह हमारी अंग्रेजी बाइबल में है, तब आप जान जाएंगे कि मैं भगवान हूँ।

और सोचो, ओह, हाँ, तब हम तुम्हें, बॉस को जान जाएँगे। लेकिन इसका मतलब उससे कहीं ज्यादा है। और हम इस बारे में बात करेंगे, खास तौर पर अगले हफ़्ते।

क्योंकि नाम है मैं हूँ। हम अगले हफ़्ते ही नहीं बल्कि पूरे अध्ययन के दौरान इस बारे में बात करेंगे कि मैं हूँ को जानने का क्या मतलब है, होने का क्या मतलब है, और फिर से, व्यक्तिगत रूप से परिचित होने का क्या मतलब है।

हमने इस बारे में पहले भी बात की है, और हम इस बारे में फिर से बात करेंगे। बाइबल में, जानना सिर्फ़ बौद्धिक ज्ञान नहीं है। बल्कि यह व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर बौद्धिक ज्ञान है।

मैं जानता हूँ कि ओबामा कौन हैं। मैं ओबामा को नहीं जानता। मैं आपको बता सकता हूँ कि मैं करेन कैनेडी ओसवाल्ड को जानता हूँ।

वैसे तो मैं इस पर उतना काम नहीं कर पाया जितना मैं करना चाहता था, लेकिन मैं इस पर पिछले एक या दो साल से काम कर रहा हूँ। परमेश्वर चाहता है कि उसे जाना जाए, और वह चाहता है कि उसे उसके चरित्र और उसकी वास्तविकता की पूर्णता में जाना जाए। और यह पुस्तक इसी बारे में है।

मोक्ष का अर्थ है ईश्वर की वास्तविकता की पूर्णता में उससे व्यक्तिगत परिचय प्राप्त करना, जिसका मानव बंधन और दूसरों पर मानव द्वारा थोपे गए दुख के संबंध में बहुत ही गहरा प्रभाव पड़ता है।

हम इसे बिल्कुल भी कम नहीं आंकते। लेकिन हम यहीं नहीं रुकते। मोक्ष में पूरे व्यक्ति को शामिल होना चाहिए।

इसमें हम सभी को शामिल होना चाहिए। और इसलिए, इस संबंध में, यह पुस्तक परमेश्वर को जानने के बारे में है। हम अध्याय 1 में उद्धार की आवश्यकता से शुरू करते हैं। अध्याय 2, उद्धारकर्ता की तैयारी।

अध्याय 3 और 4, मुक्तिदाता का आह्वान। अध्याय 5 से 1236, मुक्ति की घटनाएँ। समुद्र पार करना, 1237 से अध्याय 14 के अंत तक।

और फिर, हम बाइबल के महान भजनों में से एक के साथ समापन करते हैं। अध्याय 15, वास्तव में, श्लोक 1 से 21, समुद्र का गीत। प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में इसका उल्लेख है: मूसा का गीत।

और यह मेमने के गीत के साथ जुड़ा हुआ है, जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में है। अध्याय 15, श्लोक 21 से, हम दूसरे भाग में जाते हैं, जो ईश्वरीय विधान का प्रमाण है। यह रहस्योद्घाटन कि ईश्वर परवाह करता है।

हाँ, हाँ, वह सर्वशक्तिमान है। हाँ, इस दुनिया के देवता उसके सामने टिक नहीं सकते। लेकिन क्या उसे हमारी परवाह है? या हम उसकी शतरंज की बिसात पर बस मोहरे हैं? नहीं, उसे परवाह है।

पानी, भोजन, सुरक्षा। और आखिरी अध्याय मेरे लिए सबसे दिलचस्प है, अध्याय 18, संगठन। मूसा के ससुर आते हैं और कहते हैं, यार, तुम्हें एक समस्या है।

यहाँ बहुत सारे लोग हैं जो आप पर निर्भर हैं। आपको यहाँ संगठित होने की ज़रूरत है। और यह भगवान की कृपा है।

फिर हम उसके सिद्धांतों के प्रकटीकरण की ओर बढ़ते हैं। और यह अध्याय 19 से 24 में है। अध्याय 19 में आपको वाचा का परिचय मिलता है।

फिर अध्याय 20 से 23 में वाचा की शर्तों की प्रस्तुति। और फिर वाचा की मुहर लगाना, मुहर लगाना। जब लोगों को इस वाचा में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया जाता है।

और फिर अध्याय 25, 26, 27, 28, 29, 30, 31. मैंने कहा पाँच अध्याय, तम्बू पर सात अध्याय.

और फिर अध्याय 35 से 40 में। 35, 36, 37, 38, 39, 40। 36 अध्याय।

हम यह सब फिर से करते हैं, बस क्रिया के काल बदलते हैं। आप करेंगे से लेकर उसने किया तक। लेकिन उस दोहराव का महत्व यह है कि बीच में क्या आता है।

सोने का बछड़ा। अध्याय 32, 33 और 34। और यह समझने के लिए यह बहुत महत्वपूर्ण है कि यह खंड वास्तव में हमसे किस बारे में बात कर रहा है।

परमेश्वर मूसा के साथ पहाड़ पर है। अपनी तत्काल उपस्थिति से उनकी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। लेकिन नीचे घाटी में, वे कहते हैं कि परमेश्वर हमारी ज़रूरतों को नहीं जानता।

भगवान को हमारी परवाह नहीं है। हम नहीं जानते कि उस आदमी मूसा के साथ क्या हुआ। हमें भगवान की ज़रूरत है।

हमें एक ईश्वर बनाओ, हारून। तो, हारून वही करता है जो उसने मिस्र में सेमिनरी में सीखा था। वह एक ईश्वर बनाता है।

यह कितनी दुखद, दुखद विफलता है। तम्बू के स्थान पर, इसकी सभी भव्य सुंदरता, इसकी विविधता और इसकी जटिलता के बावजूद, उसने क्या बनाया? एक बछड़ा। यह वस्तु संभवतः एक बैल थी, लेकिन बाइबल इसका मजाक उड़ाती है जब वह इसे सोने का बछड़ा कहती है।

ऐसा तब होता है जब हम अपनी ज़रूरतें खुद पूरी करते हैं। तो, उन्होंने यह सही किया। और किताब के अंत में, अगर आपके पास बाइबल है, तो आइए उसे देखें।

यह वास्तव में एक चरमोत्कर्ष का क्षण है। अध्याय 40, श्लोक 34। तब, बादल ने मिलापवाले तम्बू को ढक लिया, और यहोवा का तेज तम्बू में भर गया।

मूसा सभा के तम्बू में प्रवेश नहीं कर सका क्योंकि बादल उस पर छा गया था, और प्रभु की महिमा ने तम्बू को भर दिया था। अब, बेशक, मैंने कहा कि यह प्रतिमान है। यह मॉडल है।

नया नियम हमें इस आदर्श की पूर्ति देता है। जब पवित्र आत्मा अपने निवासस्थान में निवास करता है। पूरी बात यहीं तक पहुँचती है।

ठीक है। रूपरेखा पर सवाल? या मैंने यहाँ और क्या कहा है? कृपया उस रूपरेखा को संभाल कर रखें। मैं आगे बढ़ने के साथ-साथ उसका संदर्भ देने की कोशिश करूँगा।

अध्ययन मार्गदर्शक भी इसका पालन करने का प्रयास करेंगे। कोई प्रश्न? यह डॉ. किनलॉ ही थे जिन्होंने कई साल पहले मुझसे कहा था कि यदि आपके व्याख्यान के बाद उनके पास कोई प्रश्न नहीं है, तो आप दो चीजों में से एक जानते हैं। या तो यह इतना स्पष्ट था कि कोई संभावित प्रश्न शेष नहीं था, या इससे भी अधिक संभावना यह थी कि यह इतना भ्रामक था कि कोई नहीं जानता था कि क्या पूछना है।

हाँ, हाँ, हाँ। कल मुझे एक ईमेल में अपनी ज़िंदगी की सबसे मज़ेदार बात मिली। इस व्यक्ति ने मुझे लिखा कि उसने अपनी ज़िंदगी में दो बेहतरीन किताबें पढ़ी हैं।

एक सीएस लुईस का था, और दूसरा जॉन ओसवाल्ड का। हे भगवान, तुम बेचारे आदमी। यह अच्छा नहीं है।

यह बिलकुल भी अच्छा नहीं है। ठीक है। चलिए अध्याय एक और दो पर चलते हैं।

अध्याय एक। मुक्ति की आवश्यकता। मैं इस पृष्ठभूमि पर चर्चा नहीं करने जा रहा हूँ क्योंकि हमारा समय समाप्त हो चुका है और जा रहा है।

लेकिन अगर आप इसे आगे बढ़ते हुए देखना चाहते हैं तो यह आपके लिए है। अध्याय एक के श्लोक एक से सात तक कुछ पूर्वकल्पना करते हैं। वे क्या पूर्वकल्पना करते हैं? उत्पत्ति।

बिल्कुल। ये लोग कौन हैं? यह इस्राएल कौन है? और यह याकूब कौन है? और याकूब का इस्राएल से क्या संबंध है? और रूबेन, शिमोन, वे लोग कौन हैं? हाँ। यह पुस्तक उत्पत्ति की धारणा पर आधारित है।

अब, यह हमें बाइबल की मानवीय अनुभव की समझ के बारे में क्या बताता है? और मैं कह सकता हूँ, मुझे कहना चाहिए, मानवीय-ईश्वरीय अनुभव। तथ्य यह है कि हमें निर्गमन को समझने के लिए उत्पत्ति की आवश्यकता है। यह हमें बाइबल की मानवीय-ईश्वरीय अनुभव की समझ के बारे में क्या बताता है? यह अनुक्रमिक है।

यह वास्तव में ऐतिहासिक है। यदि आप यह समझना चाहते हैं कि ईश्वर कौन है और वह क्या कर रहा है, तो आपको इसे समय के संदर्भ में समझना होगा। मैं यह कहने का साहस करता हूँ कि यह बाइबिल धर्म के लिए अद्वितीय है।

ओह, देवताओं के साथ, हर अनुभव नया होता है। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि कल क्या हुआ था। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि कल क्या होगा।

आप अभी उसके साथ एक रहस्यमय अनुभव कर रहे हैं, और यह पूरी तरह से हर चीज़ से अलग है। बाइबल से नहीं। यदि आप जानना चाहते हैं कि ईश्वर कौन है, तो आपको यह देखना होगा कि उसने समय और स्थान में वास्तविक मनुष्यों के साथ क्या किया है, क्रमानुसार।

हम उसके लिए मायने रखते हैं। यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु है। कोई भी अन्य धार्मिक पुस्तक अपने ईश्वर को जुड़े हुए मानवीय अनुभव के संदर्भ में प्रकट नहीं करती है।

क्योंकि देवताओं की दुनिया में इंसानों की कोई गिनती नहीं है। हम यहाँ सिर्फ़ उन्हें खाना खिलाने के लिए हैं। ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं।

लेकिन इस्राएली बहुत ज़्यादा फलने-फूलने लगे। वे बहुत ज़्यादा बढ़ गए, उनकी संख्या में वृद्धि हुई और वे इतने ज़्यादा हो गए कि देश उनसे भर गया। यह उत्पत्ति 12:1 और उसके बाद की आयतों से कैसे संबंधित है? बिल्कुल।

यह वाचा का तीसरा बिन्दु था। तुम्हारे बच्चे आकाश के तारों या समुद्रतट की रेत से भी बढ़कर होंगे। और परमेश्वर अपना वादा निभा रहा है।

अब फिर से, आप देखिए, अगर आप वाकई उस कथन को समझने जा रहे हैं, तो आपको इसे उत्पत्ति के संदर्भ में समझना होगा। अन्यथा, आप बस यही कहेंगे, ओह, ठीक है, वे वास्तव में उपजाऊ थे, और यह दिलचस्प है। ओह नहीं, नहीं, नहीं।

परमेश्वर उनसे अपना वादा निभा रहा है, भले ही वे वादा किए गए देश से बहुत दूर हैं। ठीक है, चलिए आगे बढ़ते हैं। अब फिर से, मैं आज रात यहाँ तक पहुँचने की पूरी कोशिश कर रहा हूँ, लेकिन अगर आपके पास कोई सवाल है, तो बेझिझक पूछें।

आपके दोस्तों को इसमें दिलचस्पी होगी। ठीक है, 1, 8 से 14. श्लोक 10 के अनुसार, मिस्र के लोग दो चीजों से डरते थे।

आइए, हमें उनसे चतुराई से निपटना चाहिए, नहीं तो उनकी संख्या और भी बढ़ जाएगी और अगर युद्ध छिड़ गया, तो हम अपने दुश्मनों से मिल जाएंगे, इसके खिलाफ लड़ेंगे और देश छोड़ देंगे। मिस्र के लोग किन दो चीजों से डरते हैं? यह क्या कहता है? वे दुश्मन से मिल जाएंगे और जब वे हमें हरा देंगे, तो वे यहां से निकल जाएंगे। अब, मैंने कहा कि मैं पृष्ठभूमि के बारे में बात नहीं करने जा रहा था, बस एक शब्द।

याद रखें कि संभवतः यही कारण था कि यूसुफ इस पद पर पहुंच पाया क्योंकि लगभग 200 साल की अवधि के लिए, सेमिट्स मिस्र के उत्तरी भाग पर शासन कर रहे थे और वे मिस्री होने का नाटक कर रहे थे, लेकिन वे वास्तव में सेमिटिक थे। 1550 में, मूल मिस्रियों ने विद्रोह किया और सेमिट्स को वापस कनान की भूमि में खदेड़ दिया। तो फिरौन ऐसा क्यों है, उसे क्यों डर है कि हिब्रू लोग उनके दुश्मनों में शामिल हो सकते हैं? वही झुंड।

अरे, वे लोग सेमाइट हैं, और मान लीजिए कि वे दूसरे सेमाइट फिर से यहाँ आ गए, वे उनके साथ मिल जाएँगे, और हम बड़ी मुसीबत में पड़ जाएँगे। लेकिन, मान लीजिए कि वे लड़ाई जीत जाते हैं और देश छोड़ देते हैं। इसमें क्या समस्या है? कोई मुफ्त श्रम नहीं।

अब, 1550 से 1200 के बीच ये फिरौन मूल रूप से सैन्य तानाशाह थे। और उनकी मुख्य चिंता कनान थी क्योंकि, जैसा कि हमने पहले थोड़ी बात की है, मिस्र उत्तर में अच्छी तरह से सुरक्षित है, पश्चिम में समुद्र है, पूर्व में सहारा है, दक्षिण में लाल सागर और मिस्र के बीच जंगल है, फिर से, नदी के दोनों ओर रेगिस्तान है, और वहाँ चार गंभीर झरने हैं जहाँ लोगों को अपनी नावों से उतरकर इधर-उधर भागना पड़ता है और जब वे इधर-उधर भागते हैं, तो मिस्र के लोग उन्हें मार देते हैं। बड़ा गड्ढा वहीं है।

बार-बार, सिनाई प्रायद्वीप के ज़रिए इज़राइल पर कब्ज़ा किया गया है। और इसलिए, इन फिरौन ने फैसला किया, जैसे रूस ने 1945 में फैसला किया था, अब दो बार, इन सड़े हुए जर्मनों ने हम पर हमला किया है, और उनके और हमारे बीच पोलैंड के अलावा कुछ नहीं है, और यह बहुत ज्यादा नहीं है। इसलिए, अब से, रूस की सीमा बर्लिन के पश्चिम में होगी।

इससे उनकी गति थोड़ी धीमी हो जाएगी। यहाँ भी यही बात है। मिस्र की सीमा कनानाइट तट तक जितनी दूर तक संभव हो जाएगी।

लेकिन वे केवल सैन्य तानाशाह ही नहीं थे। वे लोग भी थे, आपने सुना होगा, एक इमारत परिसर के साथ। उन सभी ने अपने अहंकार को संतुष्ट करने के लिए बड़ी से बड़ी और बड़ी चीजें बनाईं। अगर आपने अल्बर्ट स्पीयर के चित्र देखे हैं कि हिटलर के युद्ध जीतने के बाद बर्लिन कैसा दिखने वाला था, तो यह अविश्वसनीय है।

इमारतें पागल आदमी के अहंकार से मेल खाने के लिए अपने आस-पास की किसी भी चीज़ से बिल्कुल अलग हैं। यहाँ भी यही बात है। इसलिए, सबसे पहले, हम इन लोगों को हमारे दुश्मनों से जुड़ने और इस दरवाज़े को फिर से खोलने नहीं देना चाहते।

और दूसरा, हम उन्हें जाने नहीं देना चाहते क्योंकि तब हमारे पास अपने अहंकार के लिए इन विशाल स्मारकों को बनाने में मदद करने वाला कोई नहीं होगा। तो फिर, समस्याओं की बात करें तो, हिब्रू लोगों की सबसे बुनियादी समस्या क्या है? गुलामी। वे उन लोगों के गुलाम हैं जो उनसे श्रेष्ठ हैं।

यह उत्पत्ति की प्रतिज्ञाओं से कैसे संबंधित है? परमेश्वर ने अब्राहम से क्या तीन प्रतिज्ञाएँ कीं? पहला, भूमि। दूसरा, बच्चे। और तीसरा, सभी राष्ट्र तुम्हारे द्वारा आशीषित होंगे।

ये तीन वादे हैं जिन्हें आपको अपने दिमाग में बिठा लेना चाहिए - अब्राहम से किए गए तीन वादे। खैर, अगर वे मिस्र में गुलामी में हैं, तो वे वादा किए गए देश में नहीं हैं।

तो, यह एक समस्या है। 1:15 से 22. आयत 15 में किसका नाम लिया गया है और किसका नहीं? फिरौन का नाम नहीं लिया गया है, लेकिन किसका नाम लिया गया है? दाइयों का।

दुनिया का सबसे शक्तिशाली व्यक्ति गुमनाम है। और ये दो छोटी महिलाएँ, मैं कहता हूँ छोटी, शायद वे बड़ी थीं, मुझे नहीं पता, लेकिन ये दो महिलाएँ, जो दुनिया के दृष्टिकोण से बहुत महत्वहीन हैं, हम उनके नाम जानते हैं। अनंत काल तक, हम उनके नाम जानते हैं।

यह महत्वपूर्ण है। क्या भगवान आपका नाम जानते हैं? अगर जानते हैं, तो आप हमेशा के लिए जीवित रहेंगे। अगर भगवान आपका नाम नहीं जानते, तो आप बड़ी मुसीबत में हैं।

बहुत बड़ी मुसीबत है। शायद, वे और भी बहुत से लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं। आप उन सभी का नाम नहीं ले सकते, इसलिए कुछ का नाम लेने के लिए, आप दो लोगों को चुनेंगे जो प्रतिनिधि होंगे।

शायद यही हो रहा है। फिरौन ने कहा, ठीक है, ठीक है, किसी न किसी तरह, हमने सोचा कि हम उन पर यह भयानक बंधन लगाकर उनकी जन्म प्रक्रिया को धीमा कर देंगे, लेकिन वे अभी भी बच्चे पैदा करते रहते हैं, इसलिए हमें यहाँ कुछ और करना होगा। और वह दूसरा काम यह है कि हम सभी लड़के बच्चों को जन्म लेते ही मार देंगे।

लेकिन दाइयों ने आज्ञा मानने से इनकार कर दिया। उन्होंने दुनिया के सबसे शक्तिशाली व्यक्ति की आज्ञा मानने से क्यों इनकार कर दिया? हाँ। पाठ में विशेष रूप से क्या कहा गया है? वे परमेश्वर से डरते थे।

अब, मैंने पहले भी प्रभु के भय के बारे में बात की है। क्या कोई मुझे बता सकता है कि प्रभु का भय क्या है? यह विस्मय, सम्मान और आज्ञाकारिता है। यह इस बात की मान्यता है कि एक ईश्वर है जिसके प्रति मैं जवाबदेह हूँ।

यह आतंक नहीं है। यह आतंक नहीं है। वह मुझे आगे कहाँ मारेगा? बिल्कुल नहीं। प्रभु का भय शुद्ध है।

मुझे वह भजन बहुत पसंद है जिसमें कहा गया है कि प्रभु के रहस्य उनके लिए हैं जो उनसे डरते हैं। इस श्लोक का दूसरा संस्करण है, प्रभु की मित्रता उनके लिए है जो उनसे डरते हैं। इसलिए, हम किसी तरह के भयानक भय की बात नहीं कर रहे हैं जहाँ हमें डर है कि अगर हम ईश्वर की ओर तिरछी नज़र से देखेंगे, तो वह हमें मार डालेंगे।

ऐसा बिल्कुल नहीं है। यह एक ऐसा जीवन जीने का तरीका है जो इस अहसास पर आधारित है कि एक ईश्वर है जिसके प्रति मैं उत्तरदायी हूँ। नहीं, मैंने उन्हें प्रभु के भय पर एक उपदेश में एक उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया है।

हाँ। आइये भजन 34 की आयत 11 पर नज़र डालें।

आओ, मेरे बच्चों, मेरी बात सुनो। मैं तुम्हें प्रभु का भय मानना सिखाऊँगा। तुममें से जो कोई जीवन से प्रेम करता है और बहुत अच्छे दिन देखना चाहता है, अपनी जीभ को बुराई से दूर रखो, अपने होठों को झूठ बोलने से रोको, बुराई से दूर रहो और भलाई करो, शांति की तलाश करो और उसका पीछा करो।

श्लोक 6 कहता है, इस गरीब आदमी ने पुकारा, और प्रभु ने उसकी सुन ली। उसने उसे उसकी सारी परेशानियों से बचाया, और यह संस्करण कहता है कि उसके सारे डर से। अगर आप प्रभु से डरते हैं, तो आपको किसी और चीज़ से डरने की ज़रूरत नहीं है।

तो, ये दोनों महिलाएँ फिरौन से नहीं डरती थीं क्योंकि उनमें एक और बड़ा डर था और वह था प्रभु का डर। अगर हमारा जीवन प्रभु के भय पर आधारित है, तो हम हर परिस्थिति में आत्मविश्वास के साथ जी सकते हैं जिसका हम सामना कर सकते हैं। तो, परमेश्वर ने दाइयों के लिए क्या किया? निर्गमन की ओर वापस जाएँ।

उसने उन्हें आशीर्वाद दिया और उन्हें बच्चे दिए। क्या यह दिलचस्प नहीं है? उन्होंने इस्राएल की महिलाओं के बच्चों की रक्षा की, और बदले में परमेश्वर ने उन्हें बच्चे दिए। परमेश्वर के पास ऐसा करने का एक तरीका है।

जब हम दूसरों की ज़रूरतों को पूरा करने के बारे में ज़्यादा चिंतित होते हैं, तो परमेश्वर के पास हमारी ज़रूरतों को पूरा करने का एक तरीका होता है। लेकिन जब हम अपनी ज़रूरतों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो ऐसा लगता है कि यह परमेश्वर के आशीर्वाद के मार्ग में रुकावट डालता है। लेकिन जब हम इसके बारे में भूल जाते हैं और दूसरों की ज़रूरतों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो मार्ग खुल जाता है, और परमेश्वर हम पर अपना आशीर्वाद बरसा सकता है, अपने तरीके से और अपने समय पर हमारी ज़रूरतों को पूरा कर सकता है।

आप जानते हैं, मुझे लगता है कि इन महिलाओं में वह साहस है क्योंकि वे एक सर्वशक्तिमान पुरुष का सामना कर रही हैं। बिल्कुल। वे सिर्फ महिलाएँ हैं।

हाँ। और अगर आप सिर्फ इतना कर सकते थे कि कोई बड़ा अपराध कर दिया होता, बिल्कुल।

बिल्कुल, हाँ। अपना सिर काट लो। हाँ।

हाँ। तो, मुझे आश्चर्य होगा कि क्या कुछ सालों में, वे कहते हैं कि कुछ साल, लेकिन मैं सोच रहा हूँ कि क्या कोई उछाल या डूबने जैसी स्थिति नहीं होगी। हाँ, मुझे लगता है कि आप सही हैं।

एक समूह के रूप में। एक समूह के रूप में। हाँ, हाँ, हाँ, हाँ।

मुझे बहुत सारे लोगों को मौत की सज़ा देनी पड़ेगी, और इसके नतीजे हो सकते हैं। मुझे लगता है कि आप सही हैं। मुझे लगता है कि इसमें बहुत दम है।

हाँ, हाँ, यही तो यीशु कहते हैं।

उससे मत डरो, जो तुम्हारे शरीर को मार सकता है। उससे डरो, जो तुम्हारे शरीर को मार सकता है और तुम्हें नरक में भेज सकता है। अर्थात्, ईश्वर।

बिल्कुल सही। हाँ, प्रभु की आज्ञा पालन करने में बहुत बुद्धिमानी है। भजन 56 भी इसी तरह का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।

उपरिलेख में कहा गया है कि यह तब लिखा गया था जब दाऊद पलिश्टियों के साथ जेल में था। उसने पागल होने का नाटक किया था और उन्होंने इस बारे में बात करने के लिए उसे जेल में डाल दिया और उसे यकीन नहीं है कि इससे क्या होने वाला है। बहुत, बहुत महत्वपूर्ण भजन।

पद 3. जब मैं डरता हूँ, तो मैं तुम पर भरोसा करता हूँ, परमेश्वर पर, जिसके वचन की मैं प्रशंसा करता हूँ। परमेश्वर पर, मैं भरोसा करता हूँ और डरता नहीं हूँ। साधारण मनुष्य मेरा क्या कर सकते हैं? और फिर पद 10 और 11 में। परमेश्वर पर, जिसके वचन की मैं प्रशंसा करता हूँ, प्रभु पर, जिसके वचन की मैं प्रशंसा करता हूँ, परमेश्वर पर, मैं भरोसा करता हूँ और डरता नहीं हूँ, साधारण मनुष्य मेरा क्या कर सकते हैं? एक पद में वह हमें मांस कहता है। मांस।

मांस मेरा क्या कर सकता है? दूसरे में, वह हमें आदम कहता है, जो ज़मीन से जुड़ा है। मांस का एक टुकड़ा मेरा क्या कर सकता है? धूल का एक बादल मेरा क्या कर सकता है? मैं प्रभु पर भरोसा करता हूँ। और यही ये महिलाएँ हैं।

तो, अध्याय 1 की आयत 22 के अनुसार दूसरी समस्या क्या है? पहली समस्या यह है कि उन्हें वादा किए गए देश से बाहर गुलाम बना दिया गया है। आयत 22 क्या कहती है? ठीक है। अब कोई लड़का पैदा नहीं होगा।

लड़कियाँ तो ठीक हैं। अब लड़के नहीं। अब इसका क्या मतलब है? बिलकुल।

हम इस जातीय समूह को खत्म कर देंगे। लड़कियाँ मिस्र के लड़कों से शादी करेंगी। और इस तरह उनके बच्चे मिस्र के ही होंगे।

और हम इस हिब्रू ऊर्जा को जारी रखेंगे। हम सभी को नहीं मारेंगे। लेकिन हम इस जातीय समूह को नष्ट कर देंगे।

इसका वादे से क्या संबंध है? बिलकुल सही। तुम एक राज्य होगे—याजकों का राज्य।

अगर उन सभी लड़कों को मार दिया जाए तो ऐसा नहीं होगा। तो, अब हमारे सामने जो मानवीय समस्या है, मैं आपसे पूछता हूँ, इससे भगवान के बारे में क्या सवाल उठता है? क्या भगवान अपने वादे पूरे कर सकते हैं? तो, यह समस्या सिर्फ़ एक मानवीय समस्या नहीं है। यह एक ईश्वरीय समस्या है।

और पाप के मामले में भी यही सच है। पाप परमेश्वर की समस्या है और हमारी भी, क्योंकि उसने हमें संगति के लिए बनाया है। उसने हमें स्वर्ग के लिए बनाया है।

और अगर शैतान हमें हमेशा के लिए नरक में नष्ट करने में सक्षम है, तो भगवान हार गए हैं। इसलिए, पाप केवल एक मानवीय समस्या नहीं है। पाप भगवान के लिए भी एक समस्या है।

कोई कहता है, भगवान को हमारी ज़रूरत नहीं है। और यह सच है। लेकिन भगवान को हमारी ज़रूरत है।

तो, उद्धार की आवश्यकता एक मानव-दैवीय समस्या है। ठीक है, चलो अध्याय 2 पर चलते हैं। आपको क्या लगता है कि उन्होंने बच्चे को नदी में टोकरी में क्यों डाला? अब, फिर से, मैंने यह पहले भी कहा है। मैं इसे फिर से कहूँगा।

ऐसे बहुत से सवाल हैं जिनका जवाब बाइबल हमारे लिए नहीं देती। इसलिए, मैं आपके सामने खड़ा होकर यह नहीं कह सकता कि मेरे पास जवाब है, और आपके सारे जवाब गलत हैं। नहीं, मेरे पास जवाब नहीं है।

लेकिन ऐसी कई परिस्थितियाँ हैं जहाँ बाइबल हमें कहानी के बारे में सोचने और आश्चर्य करने के लिए आमंत्रित करती है। और यह पूरी तरह से वैध है। आप क्या सोचते हैं? उन्होंने ऐसा क्यों किया? ठीक है, ठीक है।

नील नदी मिस्त्रियों की माँ थी। इसलिए, इस बच्चे को माँ के स्तन पर रखने में कुछ तर्क है। ऐसा नहीं है कि योकेबेद और अम्राम ने ऐसा माना हो, लेकिन मिस्र के संदर्भ में ऐसा कहा जा सकता है।

हाँ, मुझे लगता है कि यह एक बहुत ही वास्तविक संभावना है। और क्या? मैंने अक्सर इस बारे में सोचा है। अगर वे बैठकर यह न कहें, तुम्हें पता है, तुम्हें पता है क्या? वह राजकुमारी और उसके सेवक हर सुबह नहाने के लिए यहीं आते हैं।

क्या होगा अगर हम कहें... हाँ, हाँ, हाँ। वे वास्तव में बच्चे को भगवान के भरोसे छोड़ रहे हैं। उन्हें बच्चे को मार देना चाहिए था।

और उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया। साथ ही, वे समझते थे कि अगर वे उसे अपने पास रखेंगे, तो उसे मार दिया जाएगा। और इसलिए, वे वास्तव में इस बच्चे को ईश्वर की कृपा पर भरोसा कर रहे हैं।

नील नदी के प्रावधान के लिए इतना नहीं, जितना कि उस ईश्वर के लिए जो नील नदी का मालिक है। हाँ। हाँ, ईश्वर ने ऐसा किया।

और यह सवाल यहाँ दूसरे सवालों के सेट में आता है। हाँ, हाँ, हाँ। देखिए, राजकुमारी कह सकती है, वह एक हिब्रू बच्चा है, उसे मार दो।

हाँ। तो फिर, यह है... उन्हें कोई भरोसा नहीं है कि यह बात कैसे सामने आएगी। फिरौन की बेटी ने अपने पिता की आज्ञा का उल्लंघन क्यों किया? अब पाठ को देखें, पाठ को देखें।

बच्चा रोया। हाँ, हाँ। अगर आपको यकीन नहीं है कि पुरुषों और महिलाओं के बीच अंतर है, तो बाद में मुझसे मिलने आँ।

और उनमें से एक वहीं है। बच्चा रो रहा है। चुप हो जाओ।

ओह, वह रो रहा है। उसका दिल करुणा से भर गया है। और एक औरत के दिल की करुणा एक पिता के आदेश से भी बड़ी होती है।

मैं पूरी तरह से नहीं कह सकता, लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि यह बिल्कुल सही है। यही एक जगह है। इसलिए मुझे लगता है कि यही बिल्कुल सही बात है।

अगर वह रोता नहीं तो शायद वह बच नहीं पाता। लेकिन क्योंकि वह रो रहा था, इसलिए उसका दिल द्रवित हो गया। और एक बार जब वह उसकी बाहों में था, तो कहानी का अंत हो गया।

हाँ, यह भी एक संभावना है कि वह पहले से ही इस विचार का विरोध कर रही थी। हाँ, मुझे ऐसा लगता है। अब, श्लोक 7, 8 और 9 में व्यवस्थाएँ। वे हमें परमेश्वर और उसके विधान के बारे में क्या बताती हैं? बिल्कुल सही समय।

हां हां हां।

हाँ। उसकी रक्षा करो और उसे बचाओ। हाँ।

योकेबेद, और वैसे, योकेबेद का मतलब है यहोवा महिमावान है। योकेबेद ने अपना बच्चा छोड़ दिया, और भगवान ने उसका बच्चा उसे वापस दे दिया। उसे वह करने के लिए भुगतान मिला जो उसके शरीर को करने की सख्त जरूरत थी।

और यह भगवान की तरह है। यह भगवान की तरह है। अब, श्लोक 10 कहता है कि जब उसका दूध छुड़ाया गया, तो उन्होंने उसे राजकुमारी को वापस दे दिया, और वह उसका बेटा बन गया।

परमेश्वर ने मूसा को उत्पीड़कों के हाथों में क्यों पालना चुना? उसे उनकी संस्कृति को जानना था और उनकी भाषा बोलनी थी। गलत? ठीक है। हाँ।

अब, मिस्र के फिरौन से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपनी प्रजनन क्षमता को शारीरिक रूप से यथासंभव अधिक से अधिक बच्चों के पिता बनकर साबित करें। बताया जाता है कि कुछ फिरौन के 80 और 90 बच्चे थे। फिरौन की प्रजनन क्षमता को फिर से बढ़ाने के लिए हर सात साल में एक विशेष उत्सव मनाया जाता था।

मुझे लगता है कि यह वल्वोट का एक प्रारंभिक संस्करण है। खैर, आप उन सभी शाही बच्चों के साथ क्या करने जा रहे हैं? आपने उन्हें सिविल सेवा और सेना और पुरोहिती में भर दिया। तो, फिरौन के बेटे को नागरिक प्रशासन में प्रशिक्षित किया गया होगा।

उसे सैन्य अभियानों में प्रशिक्षित किया गया होगा। उसे मिस्रियों की सभी कलाओं में प्रशिक्षित किया गया होगा। फिर से, यह भगवान की तरह है।

अब, यह हमें परमेश्वर के बारे में क्या बताता है? उसने कहा कि वह उत्पीड़कों का उपयोग मुक्तिदाता को प्रशिक्षित करने के लिए करेगा। हास्य की भावना, हाँ। वह आगे की योजना बनाता है।

उन्होंने पॉल के साथ ऐसा किया। वह बहुत किफ़ायती हैं। अगर हम इसकी अनुमति दें तो कुछ भी बर्बाद नहीं होता।

हमारे जीवन में आने वाली हर चीज़ का इस्तेमाल परमेश्वर अपने अच्छे उद्देश्यों के लिए कर सकता है। हाँ, वह योग्य लोगों को नहीं चुनता।

वह चुने हुए लोगों को सक्षम बनाता है। हाँ, हाँ। जो टुकड़े बचे हैं उन्हें इकट्ठा करो।

कुछ भी व्यर्थ न जाने दें। हाँ, हाँ। और हम अपने जीवन पर नज़र डाल सकते हैं और दुख और व्यर्थता के ऐसे पल देख सकते हैं जहाँ ऐसा लगता था कि यह सब बस एक रास्ता था।

लेकिन अपनी आँखें खुली रखें। अगर हम उसे अनुमति दें तो परमेश्वर किसी भी चीज़ का उपयोग करने में सक्षम है। अध्याय 2, श्लोक 11 से 15।

इस घटना से मूसा के कौन से गुण उभर कर सामने आते हैं? करुणा, हाँ। वह अन्याय होते देखता है, और वह द्रवित हो जाता है। और क्या? वह एक सैनिक है।

अपने लोगों के लिए प्यार। आत्मविश्वास। उतावलापन कैसा? उसे पता था कि कब भागना है।

अपने लोगों को बचाने का उसका क्या विचार था? क्रूर बल। किसका क्रूर बल? मूसा का क्रूर बल। बिना किसी कीमत के।

गुप्त रूप से किया गया। एक-एक करके किया गया। परमेश्वर की अलग-अलग योजनाएँ थीं।

वह भगवान को प्रशिक्षित कर रहा था। उसे नहीं पता था कि यह इतना शक्तिशाली था कि इसने उसे उस स्थान पर रखा। हाँ, हाँ, हाँ।

जेसुइट्स ने कहा, हमें सात साल तक एक लड़का दे दो, और वह हमेशा के लिए हमारा रहेगा। हमें नहीं पता कि बच्चे को दूध छुड़ाने में कितना समय लगा। शायद बहुत लंबा समय।

लेकिन हाँ, हाँ। वह यह नहीं भूला कि उसकी असली विरासत क्या थी। तो, आयत 14 हमें इब्रानियों के बारे में क्या बताती है? क्या वे आभारी थे? नहीं।

क्या वे मूसा की कोशिशों के प्रति उत्तरदायी थे? नहीं। नहीं। किसने तुम्हें हमारा शासक और न्यायाधीश बनाया है? क्या तुम मुझे मारने की सोच रहे हो जैसे तुमने मिस्री को मारा था? जब मैंने यह पढ़ा, तो मैंने सोचा, अरे भाई, ये वे ही हैं, और अगले 40 सालों तक यही रहेंगे।

हाँ, मुझे लगता है कि यह एक अच्छा सवाल है। मुझे नहीं लगता कि वे जरूरी थे, लेकिन फिर, आपको मुझे क्या करने के लिए कहने का क्या अधिकार है? श्लोक 16 से 22, विशेष रूप से श्लोक 21, यह हमें मूसा के जीवन के इस मोड़ पर उसके बारे में क्या बताता है? मैं मूसा के बारे में क्रिया के रूप में श्लोक 21 के कुछ अलग अनुवादों में दिलचस्पी रखूँगा। मेरे पास यहाँ NIV है।

इसमें लिखा है, मूसा ने रुकने के लिए सहमति जताई। क्या किसी के पास कोई दूसरा विकल्प है? मूसा रुकने के लिए संतुष्ट था। वह रहने के लिए तैयार था।

उसने निमंत्रण स्वीकार कर लिया। अंततः उसने हाँ कह दिया। ये सभी बातें यह बताने की कोशिश कर रही हैं कि मूसा इस स्थिति में शांत हो गया था।

मैंने कोशिश की और मैं असफल रहा। एक आदमी और क्या कर सकता है? एक आदमी ने मुझे नौकरी की पेशकश की। उसने मुझे अपनी बेटी की पेशकश की।

क्यों नहीं? माफ़? खैर, अगर उसे अपने लोगों की वाकई चिंता होती, तो वह कह सकता था, मुझे माफ़ करें। मुझे मिस्र वापस जाने का कोई रास्ता ढूँढ़ना होगा। मुझे नहीं पता कि यह कैसे काम करेगा, लेकिन मुझे अपने लोगों की खातिर किसी तरह वापस जाना होगा।

ओह, हाँ। ओह, हाँ। बस मुझे नहीं लगता कि भगवान यहाँ कुछ कह रहे हैं।

ओह, इसमें कोई संदेह नहीं। इसमें कोई संदेह नहीं। लेकिन मुझे लगता है कि वह मूसा के बावजूद काम कर रहा था।

हम कह सकते हैं कि उन्हें अपना काम पूरा करने में 40 साल लग गए, और मैं इस बात पर विवाद नहीं करूँगा, लेकिन बस। मुझे नहीं पता। मेरा मतलब है, मान लीजिए उन्होंने कहा होता, हे भगवान।

मैं अपने लोगों की गुलामी से बहुत टूट गया हूँ। मैं यहाँ मिद्यान में आज़ाद हूँ और मेरे लोग ईंटें बनाने में कष्ट झेल रहे हैं।

भगवान, क्या कोई ऐसा तरीका है जिससे आप मेरा इस्तेमाल कर सकें? नहीं, नहीं। वह वहीं रहने में संतुष्ट था जहाँ वह था। मैं, मैं, मैं कहने जा रहा था कि मुझे इसका थोड़ा-बहुत अंदाज़ा है।

मुझे थोड़ा-बहुत अंदाज़ा है। मुझे लगता है कि यह एक तरह की ऐतिहासिक बात थी। हम अगले सप्ताह इस बारे में बात करेंगे कि ईश्वर ने खुद को आपके पूर्वजों का ईश्वर बताया है।

और मुझे लगता है कि यह ऐसा था, अगर मैं हिम्मत करके कहूँ, तो यूनाइटेड मेथोडिस्ट होने के नाते, बहुत सारे यूनाइटेड मेथोडिस्ट की तरह। दादाजी इस चर्च में जाते थे। इसलिए मैं यहाँ हूँ।

मेरा अनुमान यही है। क्या यह एक तरह की ऐतिहासिक स्मृति थी। और हाँ, हाँ।

लेकिन मुझे संदेह है कि यह उससे कहीं ज़्यादा था। हाँ। हाँ।

और फिर, फिर, यह सच है, भगवान कभी कुछ नहीं खोते। अब, देखिए, मैं कहाँ रेखा खींचूँगा, कुछ लोग कहेंगे, हाँ, इसलिए भगवान ने उसे तैयार करने के लिए रेगिस्तान में रहने का इरादा किया। मैं वहाँ जाने को तैयार नहीं हूँ।

मैं यह कहना चाहूँगा कि उसने 40 साल रेगिस्तान में इसलिए बिताए क्योंकि वह मिस्र वापस नहीं जाना चाहता था। लेकिन परमेश्वर ने उसे भी अपने अच्छे उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किया। हम ऐसे ही परमेश्वर की सेवा करते हैं।

यहां तक कि, भले ही हम उसकी इच्छा के विरुद्ध हों, इसका मतलब यह नहीं है कि परमेश्वर उस समय का उपयोग अपने अच्छे उद्देश्यों के लिए नहीं कर सकता। परमेश्वर के पास पहले से क्या योजनाएँ थीं? पता नहीं। पता नहीं।

लेकिन मुझे पूरा भरोसा है कि मूसा ने मिस्र में रहते हुए परमेश्वर से यह नहीं पूछा था। परमेश्वर, आप मेरे प्रशिक्षण और पृष्ठभूमि के साथ मेरे लोगों को बचाने के लिए मेरा उपयोग कैसे करना चाहते हैं? मुझे पूरा भरोसा है कि उसने यह सवाल नहीं पूछा। उसने कहा, मैं अपने लोगों को एक-एक करके बचाऊंगा और इससे मुझे कोई नुकसान नहीं होगा। और फिर उसे पता चलता है कि इससे उसे ही नुकसान होगा।

वह वहाँ से बाहर है। ओह, हाँ, हाँ। ओह, बिल्कुल नहीं।

हम अगले हफ्ते इस बारे में विस्तार से बात करेंगे। वह वापस न जाने का दृढ़ निश्चय कर चुका है। वे लोग मुझे मारने की कोशिश करेंगे।

आप क्या सोचते हैं, भगवान? और, लेकिन हाँ, जब तक यह खत्म हो जाता है, जेश्रो, मुझे मिस्र वापस जाना होगा। ठीक है, हमें यहाँ समाप्त करना होगा। मैं अध्याय दो के अंतिम दो छंदों को देखना चाहता हूँ, जो इस पूरे विवरण में बहुत महत्वपूर्ण हैं।

उस लंबे समय के दौरान, यह श्लोक 23 और 24 है। उस लंबे समय के दौरान, मिस्र के राजा की मृत्यु हो गई। इस्राएलियों ने अपनी गुलामी में कराहना शुरू कर दिया और रोना शुरू कर दिया, और उनकी गुलामी के कारण मदद के लिए उनकी पुकार परमेश्वर तक पहुँच गई।

अब, परमेश्वर ने क्या किया? उनकी कराह सुनी, और उसने, क्या? अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ अपनी वाचा को याद किया। इसलिए, परमेश्वर ने इस्राएलियों पर नज़र डाली और उन्हें स्वीकार किया। यह बताता है कि वह उनके बारे में चिंतित था।

मुझे नहीं लगता कि यह सबसे अच्छा अनुवाद है। परमेश्वर उन्हें जानता था। परमेश्वर ने यह अस्वीकार करने की कोशिश नहीं की कि वे उसके लिए कौन थे और वह उनके लिए कौन था।

अब, ये क्रियाएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं। परमेश्वर ने सुना और देखा। यह हमें परमेश्वर के बारे में क्या बताता है? वह जागरूक है।

वह संवेदनशील है। उसे याद आया। इससे क्या पता चलता है? उसे इन लोगों के बारे में क्या याद है, क्या आपको लगता है? वह उन्हें भूला नहीं था, हाँ? उसे अपनी वाचा याद थी।

वह वफ़ादार है। वह अपने वादे पूरे करता है। मैं इन लोगों को मिस्र में नहीं छोड़ सकता।

मैंने तीन, चार सौ साल पहले वहाँ कुछ वादे किए थे। हे भगवान, यह चार सौ साल पहले की बात है। हाँ, यह सच है।

लेकिन मैंने वादे किए थे। वह मूसा का ध्यान आकर्षित नहीं कर सका। और उसने उन्हें स्वीकार कर लिया।

वह उन्हें जानता था। इससे हमें क्या पता चलता है? सर्वज्ञता? कोई मेरे पास आता है और कहता है, अरे, तुम्हें पता है, जो ब्लो, वह नशे में था। उसने अपनी कार बर्बाद कर दी।

वह जेल में है। क्या आप उसे जानते हैं? जो ब्लो? नहीं, मैं नहीं, मैंने उसके बारे में कभी नहीं सुना। असल में, वह मेरा पड़ोसी है।

भगवान क्या कह रहे हैं? उन्हें अपना कहने में उन्हें कोई शर्म नहीं है। उनमें दया है। उन्हें परवाह है।

तो, आपके धैर्य के लिए धन्यवाद, धैर्य। उद्धार का कारण क्या है? परमेश्वर का चरित्र और स्वभाव। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि मूसा को कितनी अच्छी तरह प्रशिक्षित किया गया है।

इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि उसका चरित्र और स्वभाव उस कार्य के लिए कितना उपयुक्त है जो अंततः उसे दिया जाने वाला है। यदि परमेश्वर वैसा परमेश्वर नहीं होता जैसा वह है, तो हिब्रू लोग अभी भी मिस्र में होते। समस्या यह है कि वे नहीं थे।

नहीं, मुझे लगता है कि हम इन अगले अध्यायों में देखेंगे, हम देखेंगे कि इब्रानियों ने मूसा से कहा, हमें अकेला छोड़ दो। हमें ईंटें बनाना पसंद है। लेकिन मैं समझता हूँ कि आप क्या कह रहे हैं और निश्चित रूप से यह सच है।

यह अंतर्निहित स्मृति होनी चाहिए। हमारे पूर्वजों का ईश्वर कौन है? वह कैसा रहा है? ताकि अंततः, हाँ, आप सही हैं। किसी प्रकार का ऐसा मंच होना चाहिए जिस पर अंततः विश्वास बनाया जा सके।

लेकिन उस प्लेटफॉर्म को फिर से बनाने में बहुत समय लगा। हाँ, बिल्कुल।

बिल्कुल. हाँ. हाँ.

हाँ, मुझे लगता है कि यह बिल्कुल सही है। मुझे लगता है कि अगली बार मैं पलायन की संभावित तिथियों के बारे में बात करूँगा। मैं प्रारंभिक तिथि को ही लेता हूँ और अगर ऐसा है, तो मूसा का जन्म इस नए राज्य की शुरुआत के बहुत करीब होगा।

फिरौन जो यूसुफ को नहीं जानता था। और इसलिए, हाँ। हाँ।

वे बहुत सहज हैं। उन्हें घर जाने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं हुई, जब तक कि हालात खराब नहीं हो गए और फिर वे घर नहीं जा पाए। ओह, मैं करता हूँ।

हाँ। फिर से, मुझे लगता है कि उनका धर्म बहुत, बहुत नाममात्र का था। मुझे लगता है कि अगर आपने उनसे पूछा होता कि आप किसकी पूजा करते हैं, तो वे कहते, ओह, हम अब्राहम, इसहाक और जैकब के ईश्वर की पूजा करते हैं।

वह कौन है? हम नहीं जानते। लेकिन हम उसकी पूजा करते हैं। फिर से, मैं ऐसे कुछ लोगों से मिला हूँ।

ठीक है, दोस्तों। आपकी वफ़ादारी के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। हम अगली बार बेहतर करने की कोशिश करेंगे और घंटे भर का समय लेंगे।

धन्यवाद। यहाँ आने के लिए धन्यवाद। शेष वसंत में जब आप सक्षम होंगे, तो आपसे मिलने के लिए उत्सुक हूँ।

यह डॉ. जॉन ओसवाल्ट द्वारा निर्गमन की पुस्तक पर दिया गया उपदेश है। यह सत्र 1, निर्गमन 1-2 है।